गांधी–दर्शन

समदर्शी नीतिशास्त्र के आधार

नमूना • SAMPLE

नमूना • SAMPLE

गांधी–दर्शन

समदर्शी नीतिशास्त्र के आधार

डॉ. तेजराम पाल

नमूना • SAMPLE

अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस
दिल्ली (भारत)

द्वारा प्रकाशित



अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस

Publisher, Distributor, Exporter having an Online Bookstore

एल–9ए, प्रथम तल, गली न0 42,
सादतपुर एक्सटेंसन, दिल्ली–110094 (भारत)
Phone : 9968628081, 9555149955, 9013387535
E-mail : akhandpublishinghouse@gmail.com
akhandpublishing@yahoo.com
Website : www.akhandbooks.com

गांधी–दर्शन
समदर्शी नीतिशास्त्र के आधार

संस्करण : 2020
© लेखक
ISBN: 978-81-947936-0-1

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी हिस्से को प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इलेक्ट्रॉनिक या किसी अन्य माध्यम द्वारा पुनः प्राप्ति समेत किसी भी रूप में प्रतिलिपिकृत, अनुवादित, संगृहीत नहीं किया जा सकता है और न ही किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम द्वारा इसे प्रसारित किया जा सकता है।

इस पुस्तक में लेखक द्वारा व्यक्त विचार उनके व्यक्तिगत हैं जिसका प्रकाशक से कोई संबंध नहीं है।

भारत में प्रकाशित

झपसू यादव द्वारा 'अखण्ड पब्लिशिंग हाउस' के लिए प्रकाशित। वी.एम. ग्राफिक, दिल्ली द्वारा कवर डिजाइन व शब्द संयोजन तथा आरना इंटरप्राइजेज, दिल्ली से मुद्रित।

SAMPLE

"यह पुस्तक
पूज्य पिताजी स्व. दद्दू लाल पाल जी
एवं
पूज्य माताजी स्व. भंगन बाई पाल जी
को समर्पित"

नमूना • SAMPLE

नमूना • SAMPLE

आमुख

वर्तमान युग में पूरा विश्व अपनी सभ्यता और मूल्यों के अंतर्विरोधों के दुष्चक्र में फंसता जा रहा है क्योंकि ये सिद्धांत और व्यवहार के अंतर को समाप्त करने में असमर्थ होते हैं। ये अन्तर्विरोध राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक, आध्यात्मिक एवं नैतिक सभी पक्षों में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। एक बार गांधी जी ने कहा था कि जब भी मैं किसी समस्या का समाधान या प्रश्न का उत्तर खोज नहीं पाता हूँ, तो भगवतगीता की शरण में जाता हूँ और मुझे अपनी समस्या का समाधान या प्रश्न का उत्तर कहीं न कहीं मिल ही जाता है।

वर्तमान युग में, जब पूरा विश्व आतंकवाद, गैरबराबरी, आणविक हथियार और संभावित संघर्ष, पर्यावरण या अस्वस्थता के कारणों का दुष्चक्र हो, इन समस्याओं का समाधान गांधी जी के लेखन में यहाँ या वहाँ मिल ही जाता है। राष्ट्रीय या अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर गांधी–विचार के राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक और आध्यात्मिक पक्षों पर अध्ययन किया जा रहा है एवं प्रकाशित साहित्य भी उपलब्ध है। परन्तु गांधी जी के दार्शनिक विचारों पर और विशेष रूप से उनके नैतिक सिद्धांतों पर व्यवस्थित और विस्तृत अध्ययन अपेक्षाकृत रूप से उपलब्ध नहीं है और यह कहकर संतोष कर लिया जाता है कि गांधी स्थापित अर्थों में दार्शनिक नहीं कहे जा सकते हैं।

SAMPLE

परन्तु गांधी जी के उपलब्ध साहित्य और उनकी जीवनचर्या के विवरण को यदि गंभीरतापूर्वक पढ़ा जाये, विचारा जाये और विवेचित किया जाये तो स्पष्ट रूप से गंभीर दार्शनिक और नैतिक सिद्धांतो को रेखांकित किया जा सकता है। यही कारण है कि पिछले दशक से गांधी–दर्शन को वैश्विक स्तर पर नए सिरे से समझने, पढ़ने और शोध करने का प्रयास किया जा रहा है। गांधी जी के दार्शनिक सिद्धांतों को विवेचित करती कुछ पुस्तकें हिंदी भाषा में उपलब्ध हैं, परन्तु मुख्य रूप से नैतिक विचारों पर केन्द्रित पुस्तक संभवतः नहीं है। इस पुस्तक के प्रकाशन से गांधी–दर्शन साहित्य की यह कमी पूरी होगी, ऐसा मेरा विश्वास है।

डॉक्टर तेजराम पाल ने व्यवस्थित रूप से गांधी जी के नैतिक विचारों को विवेचित किया है। इन्होंने अपने अध्ययन में एक ओर गांधी जी के नीतिशास्त्र के पाँच परम्परागत आधार जैसे– सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य की समसामयिक प्रासंगिकता का विवेचन किया है, दूसरी ओर वर्तमान युग की विसंगतियों से उबरने के लिए समसामयिक सिद्धांतों जैसे– अभय, अस्पृश्यता–निवारण, अस्वाद, कायिक–श्रम, सर्वधर्म समभाव और स्वदेशी सिद्धांतों को व्रत के रूप में अनुपालन का निर्देश मानकर विवेचित किया है। इन सिद्धांतों के द्वारा समानता, स्वतंत्रता और न्याय के परिप्रेक्ष्य में समदर्शी दृष्टि के विकास में सहायक है, यह लेखक के मौलिक चिंतन और गांधी–दर्शन के सम्यक् समझ का परिणाम है। मैं लेखक को इस गंभीर शोधपरक कार्य के प्रकाशन पर बधाई एवं शुभकामनाएं देती हूँ और अध्ययन, अध्यापन एवं शोध के क्षेत्र में इनके उज्जवल भविष्य की कामना करती हूँ।

विजयादशमी
25 अक्टूबर 2020

प्रोफेसर इंदु पाण्डेय खण्डूड़ी
विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग
हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय
श्रीनगर (गढ़वाल), उत्तराखण्ड–246174

वक्तव्य

प्रस्तुत पुस्तक 'गांधी–दर्शन समदर्शी नीतिशास्त्र के आधार' डॉ. तेजराम पाल द्वारा लिखी गई है। यद्यपि इस समय गांधी–दर्शन पर हिंदी में साहित्य उपलब्ध है, तथापि गांधी नीतिशास्त्र पर बहुत कम पुस्तकें उपलब्ध हैं, जिनमें गांधी जी के समदर्शी नीतिशास्त्र पर समीक्षात्मक एवं विश्लेषणात्मक विवेचन उपलब्ध हो। प्रस्तुत पुस्तक में गांधी–दर्शन के समदर्शी नीतिशास्त्र तथा गांधी जी के नैतिक सिद्धांतों के नवीनतम रूपों से भी पाठकों को परिचित कराने का प्रयत्न किया गया है।

इस पुस्तक का मुख्य उद्देश्य विभिन्न विश्वविद्यालयों में हिंदी के माध्यम से अध्ययन करने वाले छात्रों को गांधी–दर्शन और गांधी–नीतिशास्त्र से परिचित कराना है एवं वर्तमान में समाज में व्याप्त विसंगतियों को दूर कर नैतिक चेतना को जागृत करना है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस पुस्तक से दर्शनशास्त्र के स्नातक और स्नातकोत्तर कक्षाओं के विद्यार्थियों के अतिरिक्त शोधार्थी भी लाभान्वित होंगे एवं इस पुस्तक के माध्यम से समाज के सभी वर्गों में नैतिक चेतना का संचार होगा तथा इसका व्यापक रूप से प्रत्येक वर्ग पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

मैं ऐसे भगीरथ प्रयास के लिए डॉ. तेजराम पाल को अपनी शुभकामना तथा बधाई देता हूँ।

SAMPLE



विजयादशमी
25 अक्टूबर 2020

प्रो. भरत कुमार तिवारी
विभागाध्यक्ष
दर्शनशास्त्र एवं योग विभाग
रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय,
जबलपुर (म.प्र.) – 482001

नमूना • SAMPLE

समदर्शी की दर्शना

शुभागत

दर्शन का समदर्शी होना न्याय संगत है, परिप्रेक्ष्य गांधी दर्शन समदर्शी है। समभाव का चिंतन गांधी दर्शन में व्याप्त है, यह 'सम' का भाव ही मनुष्य में समदृष्टि देता है, यह 'समदृष्टि' ही समदर्शी होना है। भगवत्–दृष्टि भी यही है। गांधी की दृष्टि भगवत् गीता में मातृत्त्व का दर्शन पाती है, गांधी 'गीतामाता' का उच्चारण करते हैं। ध्यातव्य हो कि माता की दृष्टि 'सम' होती है, वह परिवार समाज और देशकाल के हेतु समभाव का आग्रही होती है, अस्तु गांधी में समदृष्टि स्वाभाविक है।

'नीति' कल्याणकारक बहुआयामी उद्देश्य की पूर्णता में परिपोषण की पर्यायवाची है। शास्त्रीय विधान में शुचिता की नियामक है, वहीं व्यवहार में नीतिदर्शन का न्यायोचित सद्‌गुण है। नीतिशास्त्र इन्हीं मानवीय 'सद्‌गुण' का मूल्यबोध है। ऐसे में डॉ. तेजराम पाल ने 'गांधी दर्शन : समदर्शी नीतिशास्त्र के आधार' जैसी अवधारणा की खोज की है, यह उनकी नवीन अन्वेषणा है।

चिंतन की गहराई में गोता लगाया जाय तो 'समदर्शी' व 'नीतिशास्त्र' दोनों एक दूसरे के पूरक पर्याय का भावार्थ देते हैं; क्योंकि समदर्शी की भावना उसी को प्राप्त होगी जो नीतिवान होगा और नीतिवान वही होगा जो शास्त्र–संगत नीति–निर्णय में समदर्शी होगा।

SAMPLE

गांधीदर्शन के सम्पूर्ण आयाम 'सम' के आह्वान पर मानवता का निहितार्थ हैं और इसके आधारतत्त्व में गांधी के 'एकादशव्रत' ही आधारभूमि प्रदान करते हैं। सम्भवतः समदर्शी नीतिशास्त्र के दार्शनिक आधार इससे इतर नहीं होंगे। चूँकि गांधीदर्शन के नैतिक विचार नीतिशास्त्र के समदर्शी दर्शन से परे नहीं हैं बल्कि इनमें एक गुम्फन है जो जीवन–प्रयोग में व्यक्तित्त्व–निर्माण के हेतु आधारतत्त्व देता है। गांधी ने ऐसे ही नहीं पाँच यम (अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह) के साथ छः व्यवहार–चिंतन (शरीरश्रम, अस्वाद, अभय, सर्वधर्म समभाव, स्वदेशी, स्पर्शभावना) को समाहित किया। उन्होंने इसे व्रत कहा, जिसे व्यक्ति में निष्ठा से पालन हो तभी दर्शन (चिंतन) का समदर्शी होना फलित होगा अर्थात् गांधीदर्शन के ये एकादश–व्यवहार–तत्त्व ही समदर्शी नीतिशास्त्र के अनुप्रयुक्त दर्शन (Applied Philosophy) हैं, जिसकी प्रासंगिकता बनी रहेगी।

नीति की अन्वेषण–यात्रा में सन्निहित डॉ. तेजराम पाल ने गांधीदर्शन में समदर्शी नीतिशास्त्र के आधार तत्त्व का गूढ़ार्थ अन्वेषित करने का सफल प्रयास किया है जो दर्शन के क्षेत्र में समदर्शी नीतिशास्त्र को नया फलक प्रदान करता है। इस न्वोन्मेषण के लिए डॉ. तेजराम पाल को बधाई।

विजयादशमी
25 अक्टूबर 2020

डॉ. डी. एन. प्रसाद
असोसिएट प्रोफेसर
संस्कृति विद्यापीठ,
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय
हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा–442001 (महाराष्ट्र)

भूमिका

गांधी वाङ्मय और अन्य गांधी साहित्य के अध्ययन के दौरान मुझे यह आभास हुआ कि महात्मा गांधी वह महासागर है जिसकी गहराई का सही आंकलन कर पाना मेरे जैसे सामान्य शोधार्थी के लिए पूर्णतया सम्भव नहीं है। गांधी–दर्शन जीवन की असीम सम्भावनाओं से भरा हुआ है। वह विश्व की सभी समस्याओं के लिए एक समाधान के रूप में हमारे समक्ष उपस्थित है।

गांधी जी के तत्त्वमीमांसीय और ज्ञानमीमांसीय विचार उनके वास्तविक दार्शनिक होने का प्रमाण प्रस्तुत करते हैं। तत्त्वमीमांसा में 'सत्य' रूपी तत्त्व का अन्वेषण और विश्लेषण किया गया है एवं उसे प्राप्त करने के लिए ज्ञानमीमांसा में 'अन्तरप्रज्ञा और अन्तरदृष्टि' प्रमाण को साक्ष्य रूप में प्रस्तुत किया गया है। समाज को सुचारू रूप से गति देने के लिए एकादश नैतिक मूल्यों का प्रयोग किया गया है। यह नैतिक मूल्य हमारी प्राचीन सभ्यता व संस्कृति से उत्पन्न और समसामयिकता को संवारते हुए प्रतीत होते हैं। जो गांधी जी के लिए मानवीय मूल्यों के समकक्ष है। यह मानवीय मूल्य ही दर्शाते हैं कि सत्य के आग्रही व प्रयोगकर्त्ता गांधी जी की नीति समदर्शी है। जो देश, धर्म, जाति, पंथ, सम्प्रदायों एवं वर्गों में निहित एकता को उजागर करते है। उनके लिए आस्तिक–नास्तिक, निम्न–उच्च, भारतीय–अभारतीय आदि जैसी कोई सीमा रेखा नहीं थी। गांधी–दर्शन समदर्शिता की नीति के भाव से ओत–प्रोत है।

SAMPLE

हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर (गढ़वाल), उत्तराखण्ड में विद्यावाचस्पति (Doctor of Philosophy) की उपाधि के लिए सन्–2019 में शोध प्रबन्ध के रूप में प्रस्तुत एवं अनुमोदित यह कृति बिना किसी संशोधन के अपने मूल रूप में प्रकाशित की जा रही है।

मैं अदृश्य एवं सर्वव्याप्त सृष्टि के संचालनकर्ता को कोटि–कोटि प्रणाम करता हूँ, जिनके द्वारा मेरे अन्तःमन में उत्पन्न प्रेरणा से इस कार्य को पूर्ण करने में मैंने सफलता प्राप्त की है। आह्लाद की इस वेला में जिन महानुभावों के आशीर्वाद, प्रेरणा, मार्गदर्शन, सहयोग एवं महत्त्वपूर्ण सुझावों से यह कार्य पूर्ण करने में मैं सक्षम हो सका हूँ, उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करना मैं अपना दायित्व मानता हूँ।

प्रथमतया अलोकपुँज रूप मेरी शोध–निर्देशिका प्रो. इन्दु पाण्डेय खण्डूड़ी, दर्शनशास्त्र विभागाध्यक्ष, हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर (गढ़वाल), उत्तराखण्ड के प्रति नतमस्तक हूँ, जिनके स्नेहयुक्त कुशल निर्देशन एवं उन्नत प्रेरणात्मक मार्गदर्शन से मैंने इस शोध–प्रबन्ध को पूर्ण किया। इस श्रृंखला में मैं आभार व्यक्त करता हूँ प्रो. भरत कुमार तिवारी जी एवं डॉ. डी. एन. प्रसाद जी का जिन्होंने अपने कार्य की व्यस्तता के मध्य मेरी पुस्तक के लिए 'वक्तव्य' लिखकर आशीर्वचन प्रदान किए। मेरे शोध कार्य में गांधी दर्शन की बहुत–सी गुत्थियों को सुलझाने में प्रो. गायत्री सिन्हा जी, प्रो. प्रियव्रत शुक्ल जी, प्रो. छाया राय जी, डॉ. डी. एन. शुक्ला जी, प्रो. मृगेन्द्र कुमार सिंह जी, प्रो. विभा मुकेश जी, प्रो. रामजी सिंह जी एवं प्रो. राकेश चन्द्रा जी का मार्गदर्शन समय–समय पर प्राप्त होता रहा, मैं इन सभी आचार्यगणों का हृदय से आभारी हूँ।

मैं अपने उन देशवासियों का भी ऋणी हूँ जिनके द्वारा प्रदत्त कर का एक अंश, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (केन्द्रीय विश्वविद्यालय छात्रवृत्ति) एवं भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद (ICPR) के द्वारा शोधवृत्ति के रूप में मुझे प्रदान किया गया, मैं इस कृत्य के लिए हृदय आभारी हूँ।

मैं अपने पूज्य स्व. पिता दद्दू लाल पाल एवं स्व. माता भंगन बाई पाल के चरणों में नतमस्तक हूँ, जिनके आशीर्वाद एवं असीम स्नेह से मैं अपने प्रत्येक महत्त्वपूर्ण कार्य को करने में सक्षम हुआ हूँ। मैं अपने सभी भ्राताओं श्री सालकराम पाल, श्री पूनमचंद्र पाल, श्री जगतसिंह पाल, श्री गुरूप्रसाद पाल, श्री सुखदयाल पाल एवं बहिन श्रीमती शांता बाई पाल, श्रीमती पार्वती पाल एवं राजकुमारी पाल के प्रति निःशब्द कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। इन सभी के त्याग, प्रेरणा और मार्गदर्शन के अभाव में, मैं कभी भी इस कार्य की परिणति तक नहीं पहुँच पाता। मैं अपने आदरणीय काकाजी, श्री भरतराम पाल जी के अविस्मरणीय सहयोग एवं प्रेरणा के लिए सदैव आभारी रहूँगा।

मेरी जीवन–संगिनी डॉ. श्रुति मीमांसा जी एवं गुरू बहिन डॉ. कविता भट्ट जी का सहृदय आभारी हूँ, टंकण कार्य एवं त्रुटि सुधार में इन दोनों विदुषियों का आत्मीय सहयोग निरंतर बना रहा। साथ ही मेरे सहपाठी मित्र डॉ. दिनेश पाटीदार, डॉ. देवेन्द्र सिंह, श्री अजय डहाके, डॉ. आशुतोष व्यास, डॉ. मनोज तंवर, डॉ. इनामूर रहमान, डॉ. रमेशचंद्र कुशवाहा, डॉ. शोभा बिसेन, डॉ. नरपाल सिंग एवं डॉ. नासिफ खान इत्यादि सभी मित्रों के द्वारा प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से मेरे शोधकार्य में सहयोग निरंतर प्राप्त होता रहा है, मैं सभी मित्रों का सहृदय आभार व्यक्त करता हूँ।

प्रस्तुत शोधकार्य में शैक्षिक केन्द्र भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद् लखनऊ, केन्द्रीय पुस्तकालय दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, केन्द्रीय पुस्तकालय हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर (गढ़वाल), गांधी आश्रम सेवाग्राम और सर्वसेवा संघ पुस्तकालय, सेवाग्राम के ग्रन्थ–संग्रह सहायक रहे हैं। एतदर्थ मैं समस्त पुस्तकालयाध्यक्षों एवं उनके सहयोगियों का हृदय से आभारी हूँ। मैं पुस्तक को प्रकाशित करने के लिए 'अखण्ड पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली', का हृदय से आभारी हूँ। मैं उन समस्त गुरूजनों, मित्रगणों, सम्बंधियों एवं परिवारजनों का सहृदय आभार व्यक्त करता हूँ, जो मेरे इस शोधकार्य में प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से मेरे सहयोगी व हितैषी रहे हैं।



स्थान – जबलपुर
तिथि – विजयादशमी
दिनांक – 25 अक्टूबर 2020

डॉ. तेजराम पाल
दर्शनशास्त्र विभाग
रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय
जबलपुर (म.प्र.) – 482001

नमूना • SAMPLE

विषय–सूची

	समर्पण	v
	आमुख	vii
	वक्तव्य	ix
	समदर्शी की दर्शना	xi
	भूमिका	xiii
1.	महात्मा गांधी का जीवन दर्शन	1
2.	समदर्शी नीतिशास्त्र के दार्शनिक आधार	43
3.	गांधी के नीतिशास्त्र के पाँच परम्परागत सिद्धान्त	80
4.	गांधी के नीतिशास्त्र के छः समसामयिक सिद्धान्त	124
5.	समदर्शी नीतिशास्त्र में गांधी के नैतिक विचारों का योगदान	180
6.	गांधी–दर्शन की प्रासंगिकता	214
	ग्रंथ सूची	222

SAMPLE

''मेरा जीवन ही मेरा संदेश है''

—मोहनदास करमचंद गाँधी

नमूना • SAMPLE